

देशबन्धु  
(21.04.2015)

# 'गरीबी के कारण गिरवी रख दिए बच्चे

## खरगोन पुलिस ने गड़रियों के चंगुल से 2 और बच्चे छुड़ाए



खरगोन, देशबन्धु। हरदा जिले से गड़रिये के चंगुल से बचकर चाइल्ड लाईन के संपर्क में आने के बाद तीन बच्चों को खरगोन के बालगृह छोड़ा गया था। इसके बाद हरकत में आई पुलिस ने गिरफ्त में आए एक गड़रिये और बच्चों की निशानदेही पर दो अन्य बच्चों को छुड़ाया है। यह बच्चे उनके अभिभावकों ने गरीबी के कारण गड़रिये को गिरवी रख दिए थे। पुलिस आज हरदा से एक अन्य गड़रिये हेमला उर्फ समेला के साथ दो नाबालिग बच्चों को लेकर शहर पहुंची। एसपी अमित सिंह ने बालगृह पहुंचकर बच्चों से पूछताछ की। इनमें एक बच्चा मोहनपुरा का है और एक बच्चों से पूछताछ की। इनमें एक बच्चा मोहनपुरा का है और एक आमल्यापानी निवासी है। मोहनपुरा निवासी बच्चे ने एसपी को बताया कि वे दो भाई हैं, एक भाई बनिहार में पढ़ता है। उसे उसके पिता जगन और लालू नामक व्यक्ति ने खंडवा ले जाकर गड़रिये के सुपुर्द किया था। उसके पिता ने उसे बताया था कि कर्ज होने के कारण उसे गड़रिये के पास एक साल के लिए काम पर रखा जा रहा है। बच्चों ने बालगृह में न रहकर माता-पिता के पास जाने की इच्छा जताई है।

पास होने की जानकारी दी थी। इसी आधार पर एक दल गठित कर हरदा भेजा गया था। सोमवार को हेमला को दंबोच लिया गया उसके कब्जे से एक 12 और एक 10 साल के नाबालिग बच्चों को छुड़ाया गया है।

उल्लेखनीय है कि 18 अप्रैल को हरदा जिले के चाइल्ड लाईन के संपर्क में आए तीन नाबालिग बच्चों को शनिवार शहर लाया गया था। तीन नाबालिग बच्चों ने अपने अभिभावकों के साथ रहने से इंकार कर दिया। इसके बाद बच्चों को निराश्रित बालक-बालिका गृह में रखा गया है। उस समय खुलासा हुआ कि भगवानपुरा जनपद के ग्राम मोहनपुरा निवासी माता-पिता और एक अन्य ने आर्थिक बदहाली के चलते एक गड़रिये के हाथ तीन बच्चों को 45 हजार रूप में गिरवी रख दिया था।

### उनका कहना है

शुरुआती जॉब में एक बच्चे को मोहनपुरा निवासी बच्चे को 18 हजार में बेचना बताया गया है। वहीं आमल्यापानी निवासी बच्चे के माता-पिता गुजरात मजदूरी के लिए गए हैं, उन्हें सूचना कर बुलाया गया है। उनके आने के बाद ही मामले में और अधिक जानकारी मिलेगी।

अमित सिंह, एसपी खरगोन

### बेबसी में उताते हैं यह कदम

मोहनपुरा में बच्चों के अभिभावकों ने पूछताछ के दौरान बताया कि वे बेबसी और गरीबी के कारण जिगर के टुकड़े परिवार से दूर कर देते हैं। क्यों कि कम जमीन के कारण भयण-भयण में परेशानी होती है। गड़रिये उन्हें एकमुश्त 7 से 20 हजार रूप तक एक बच्चे की एवज में दे देते हैं। ये बच्चे पढ़ाई-लिखाई छोड़कर मजबूरी में भेड़ चराते हैं।

### अमी मी कई बच्चे हैं लापता

दिसंबर 2010 में भी देवास जिले के हाटपिपल्या से दो बच्चे भेड़पालकों के चंगुल से निकल भागे थे। ये बच्चे आदिवासी अंचल गुडिया के रहवासी थे। अभिभावक ने इन बच्चों को 7 हजार रूप में सौदा कर बेचा था। बकायदा बर्बाद 7 हजार एडवॉस लेकर इन बच्चों को सुपुर्द किया था। इस अंतराल में 100 से अधिक बच्चे भेड़ पालकों के डेर में पहुंच गए हैं। ये बच्चे जिले के आदिवासी बहुल भीकनगाव, शिरन्या, भगवानपुरा आदि क्षेत्रों के हैं। भीकनगाव के सुंदेल, पलासी, पोई ग्राम पंचायत अंतर्गत कोडियाखाल, डेहरी, चिकलवास, महुमांडला के फालियों से बच्चे बचे गए। अभिभावकों के अनुसार ये बच्चे 8 से 10 हजार रूप में भेड़ पालकों को सौंपे थे।

एसपी सिंह ने बताया की शनिवार को हरदा पुलिस और चाइल्ड लाइन सदस्यों ने 3 बच्चों और एक गड़रिये भूरा को पुलिस को सौंपा था। पूछताछ में भूरा ने एक अन्य साथी हेमला उर्फ समेला का नाम बताया था, वहीं दो अन्य बच्चों के हेमला के

